जाट - जाटिन



प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना—१

●

प्रथम संस्करण
विद्यापति-स्मृति-दिवस
३१ अक्तूबर, १९७१

●

मूल्य—१.०० (एक टाका मात्र)

●

मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस,
पटना—४

आमुख

जट-जटिनक नृत्य-गीत मिथिलाक विलक्षण सांस्कृतिक निधि थिक। एकर ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं कलात्मक रहस्यक उद्घाटन कए पण्डित राजेश्वर झा मात्र मैथिलीक नहि अपितु समस्त भारतीय वाङ्मयक एवं नृत्य-संगीत जगतक प्रशंसनीय सेवा कएलनि अछि। जाहि द्रुतगति सँ औद्योगिक यान्त्रिक सभ्यताक प्रचार-प्रसार भए रहल अछि—जँ शीघ्राति-शीघ्र लोककथा, लोकनृत्य, लोकगीत आदि केँ स्वरबद्ध एवं लिपिबद्ध नहि कएल गेल तँ देखितहि देखितहि हमरालोकनिक ई सब अमूल्य निधि बिलाए जाएत।

आश्चर्यक विषय जे एहि जन्तन्त्रक युगहुमे जट-जटिनक कलात्मक महत्त्व दिसि चलचित्र निर्मातालोकनि किंवा भारत सरकारक 'डांस-ड्रामा' विभागक ध्यान नहि आकृष्ट भेल अछि। आदिवासी नृत्य, भाङरा नृत्य, गरवा नृत्य आदिक बड़ प्रचार भेल अछि। प्रत्येक वर्ष बिहार सँ 'रिपब्लिक डे'क अवसर पर आदिवासी नृत्य दल दिल्ली पठाओल जाइछ जेना कि बिहार केँ आदिवासी नृत्यक अतिरिक्त आन कोनो नृत्य नहि रहैक। हमर दृढ़ विश्वास अछि जे जँ ओरिआए केँ जट-जटिन नृत्यगीतक प्रचार कएल गेल तँ भारतक आन कोनो नृत्यगीत सँ ई कम लोकप्रिय नहि होयत।

मैथिली साहित्य संस्थान, पटनाक लक्ष्य थिक सांस्कृतिक पुनर्जागरण। जट-जटिनक नृत्य-गीत पर पोथी लिखिकेँ पण्डित राजेश्वर झा उपर्युक्त लक्ष्यक पूर्त्तिक दिशा मे महत्त्वपूर्ण योगदान कएल अछि।

पटना
विद्यापति-स्मृति-दिवस
३१-१०-७१

दीनानाथ झा
अध्यक्ष
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना—१

प्राक्कथन

डब्ल्यु० क्रूक महोदय मेरठ एवं रोहिलखण्ड केँ प्रख्यात कृषक जाति जटक प्रारम्भिक निवास स्थल बुझैत छथि। ओतहि सँ ई जाति क्रमशः देशक आन-आन भाग मे पसरल। एहि जातिक उत्पत्तिक प्रसंग मे कथ्य अछि जे दक्ष प्रजापतिक यज्ञ मे जखन पार्वती अपन शरीरान्त कएलनि तँ क्रोधानिल मे जड़ैत भगवान शंकर पृथ्वी पर अपन जटा केँ पटकल। फलस्वरूप एक पराक्रमी पुरुष प्रकट भेलाह तथा भगवान शिव सँ आज्ञाक याचना कएल। शंकर हुनका दक्षप्रजापतिक यज्ञ केँ विध्वंश करबाक आदेश देलथिन। ओ हुनक आदेशक पालन कएल तथा वीरभद्रक नाम सँ प्रख्यात भेलाह। हुनकहि सँ जट जातिक उद्भव भेल जे महादेवक जटा सँ उत्पन्न भेला सन्ताँ जट नामे विख्यात अछि। अनुश्रुतिक अनुसार जट जाति पंजाब वा राजपुताना सँ आन-आन भाग मे प्रसारित भेल तथा जखन मुहम्मदगोरी चित्तौर पर अधिकार कएल तँ जट जातिक दुई गोट दल मे सँ एक गोट दल तँ नेपाल दिसि आएल तथा दोसर दल अजमेर, बिकानेर, दिल्ली होइत मुजफ्फरनगर जिलाक मिरानपुर गाँव मे बसल। जटक जे दल नेपाल दिसि आएल प्रायः ओकर सम्बन्ध एहि नृत्य-गीत सँ अछि। सम्भवतः ओहि मे सँ किछु गोटा मिथिला मे बसल होथि जनिकर मनोरंजनार्थ जे नृत्यगीत छल ओ क्रमशः लोक मध्य पसरल जे पश्चात ओहि जातिक नामे प्रख्यात भए मिथिलाक लोककथा मे रूपान्तरित कएल गेल।

मिथिलाक लोककथा व्यक्ति वा जाति-प्रधान नहि भए कल्पना प्रधान, आध्यात्मिक एवं सामाजिक थिक जे जगतक अनेक रूपता मे जीवनक समस्त स्तर, सीमा और विस्तार मे पारलौकिक यथार्थक उद्घाटन करैत अछि। मिथिलाक लोकगीत एवं नृत्य केवल मनोरंजन नहि थिक ओ जीवनक रहस्यक उद्देश्य एवं बिलासिताक अमूर्त्त और प्रगाढ़ सत्वक दिग्दर्शन सेहो करबैत अछि।

मिथिलाक जट-जटिनक गीत एवं नृत्य मे एहि तरहक तथ्य सन्निहित अछि। जट-जटिन स्त्रीगण लोकनिक मनोरंजनक नृत्य थिक। एहि मे मात्र स्त्रीये पात्रक कार्य करैत अछि, गीत गबैत अछि और स्त्रीये प्रेक्षको रहैत अछि। एहि मे एक दिसि तँ दाम्पत्य जीवनक मार्मिक पक्ष उभड़ैत

अछि जे ने तँ पौराणिक कथा मे वा ने परम्परागत प्रेमाख्याने मे उपलब्ध अछि और दोसर दिसि एहि मे दार्शनिक तथ्य सन्निहित अछि जकर सम्बन्ध मूलतः तंत्र सँ अछि।

जट-जटिनक आयोजनक उद्देश्य प्रधानतः वर्षाक निमित्त होइत अछि। सावन-भादवक शुक्ल पक्षक राति एहि हेतु विशिष्ट थिक। एहि मे जट और जटिन सँ सबद्ध दुई वर्ग मे स्त्रीलोकनि विभक्त होइछ तथा एक स्त्री पुरुषक भेषधारी जट-पात्रक अभिनय करैछ। अभिनय केँ मनोरंजक बनेवाक निमित्त खोदपारिन एवं रोहिदासक चिकित्साक आयोजन सेहो कएल जाइछ। जट-जटिन मे बंका और भकुलीक विवाहक नामे जट और जटिनक प्रणय-सम्बन्ध होइछ।

जट-जटिनक अभिनयक उपरान्त स्त्रीक द्वारा हर जोतवाक परिपाटी अछि। तत्पश्चात बेंग कूटल जाइछ तथा ओकरा एहेन व्यक्तिक घर मे फेंकल जाइछ जे गारि देबा मे बड़ विख्यात रहैछ। एवंक्रमेँ अभिनय समाप्त होइछ जकर सम्बन्ध विशुद्ध खेती सँ थिक। एहि प्रसंग मे निम्न-लिखित गीत कतेक मार्मिक अछि :—

चमराक खत्ता-खुत्ती छापर छुपर पनिया
ओहि मे नहाय छै ....बभना,
धोतियो ने खीचै छै जनऊओ ने माँजै छै,
दयो ने लागै छौ हौ इनरलोक,
दैवा पानी रे बिनु ना।
पानी रे बिनु पड़लै अकाल दैवा पानी रे
बिनु ना।
चर सुखलै चाँचर सुखलै सुखि गेलै
सगरो संसार,
दैवा पानी रे बिनु ना।
पानी बिनु पड़लै अकाल दैवा पानी रे
बिनु ना।
...झा के धियापुता खुद्दी ले कानै छै
दयो ने लागै छौ हौ इनरलोक।
दैवा पानी बिनु पड़लै अकाल दैवा पानी
रे बिनु ना।

राँड़ी बभिनियाँ हर जोतै छै बीया बुनै छै
दयो ने लागै छौ हौ इनरलोक देवा ।।
सगरे सुने छियै……बड़ धनिक छै रे ना
एक सेर कें दूई सेर बनबै छै रे ना,
चिपड़ी रोटी चुटकी नून जन कें दै छै रे ना।
ओकरा नामे जन सभ कानै छै रे ना,
ओकरे पापे पनिया नै होय छै रे ना ।।

उपर्युक्त गीत मे वर्षाक अभाव मे अकालक केहेन सांगोपांग चित्रण कएल गेल अछि ! स्त्रीक द्वारा हर जोतब, ब्राह्मणक द्वारा दैनिक कर्मक अवहेलना तथा सामन्तवादक विरोध आदिक केहेन मार्मिक वर्णन एहि मे अछि ।

एहि नृत्य एवं गीत मे वर्णित भाषाक माधूर्य, सरस भाव एवं साहित्यिक अन्तरंग और काव्य ओहि नाटक सँ भिन्न अछि जकर विकास संस्कृत नाटकक ह्रासकाल मे संगीत-नृत्य तथा भाषाक संवादक समावेश द्वारा भेल अछि ।

जट-जटिनक "नृत्य-गीत" मैथिली भाषाक विलक्षण नमूना थिक जकर सम्बन्ध लोक जीवन सँ अछि। विश्वास अछि मैथिलीक विद्वान-लोकनि कें हमर ई प्रयास नीक लगतनि ।

—राजेश्वर झा

विद्यापति-स्मृति-दिवस, ३१ अक्तूबर, १९७१

जट-जटिन

जट-जटिनक गीत एवं नृत्य मे नारी हृदयक उल्लसित एवं उत्कण्ठित भावना सन्निहित रहैछ जकर सम्वन्ध साधारणतः पारिवारिक जीवन सँ अछि। पति-पत्नीक पारस्परिक दिन-प्रतिदिनक कलह, हठ एवं दुराग्रह के नितान्त मनोरंजक रूप मे उल्लेख करैत झूमरिक नृत्यक प्रस्तावना एहि गीत सँ प्रारम्भ कएल जाइछ :—

सावन भादव केर राति इजोरिया
सखि पिया हे, खेलै छै झूमरिया, कदम तरे।
जब पहुँ आगे धनि खेलबै झूमरिया
खेलबै झूमरिया, कदम तरे
धनि हमरा लागि पलंग बिछाए दियौ, हमरा लागि।
पलंगा बिछैते पिया हे, बड़ी देर लगतै,
से बड़ी देर लगतै,
पिया हे सखि सभ खेलबा उसारतै, सखि सभ।[1]

---

१ अ एहि प्रसंग मे मिम्नलिखित गीतक प्रचलन सेहो पाओल जाइछ :—
ठाढ़े इजोरिया पिया हे निर्मल रतिया,
पिया हे खेलै छै झूमरिया सखि सभ।
पिया हे जेबै खेलै ले झूमरिया सखि संग।
जँ तोहें आगे धनि जयबै खेलै ले झूमरिया,
घनि गे धनमा सुखाय दही गे।
धनमा सूखैते पिया हे बड़ी देर लगतै,
पिया हे सखि सभ खेलै छै झूमरिया,
जँ तोहें आगे धनि खेलबें झूमरिया,
धनि गे हमरा ले भतवा रन्हाई दही हमरा ले।
भतवा रान्हैत पिया हे बड़ी देर लगतै,
सखि सभ खेलै छै झूमरिया।
जँ तोहें आगे धनि खेलेवें झूमरिया,

पत्नीक अप्रतिभ उत्कण्ठाक माधुर्यक संग पतिक विरोध एवं दुराग्रह केँ पत्नीक द्वारा मर्यादापूर्वक उल्लंघन करबाक कतेक बिलक्षण चित्रण उपर्युक्त गीत मे कएल गेल अछि ?

प्रस्तावनाक दोसर अंश थिक नाचक संग संवाद-गीत। एहि मे स्त्री-लोकनि जे एहि नाचक पात्र-पात्री रहैत छथि ओ दुई वर्ग मे विभक्त भए एक दोसरा केँ अभिनयक हेतु आमंत्रित करैत नृत्यक उमंग एवं मनोरंजन मे मिथिलाक आध्यात्मिक तथ्य केँ दिग्दर्शन करबैत छथि :—

प्रथम दल— चलह हे सिरमनि बेटी हो-हो रे,
भूमरि खेलबै ना।
द्वितीय दल— कथि रे पात चढ़ि हो हो रे,
भूमरि खेलबै ना।
प्रथम दल— पुरैनी रे पात चढ़ि हो हो रे,
भूमरि खेलबै ना।
द्वितीय दल— ओहि पुरैनी केँ चूरि-चारि हो-हो रे,
ओहि भीकि मारबौ ना।

देख लही काँच कड़चिया।
जँ तोहेँ आहे पिया मारब कड़चिया,
रूसि जयबै पिया हे अपन नैहरबा।
जँ तोहेँ आगे धनि जयबे नैहरबा,
हमहुँ जयबै आगे धनि देश वंगलबा।

एहि प्रसंग मे एक अन्य गीत सेहो पाओल जाइछ :—

(आ) गामक पच्छिम एक गुलरीक गछिया हे खेलौना हरि झूमरि।
ताही तर सूगना मड़राय छै हे खेलौना हरि झूमरि।
सूगनाक आँठि-कुठि मैना जे खेलकै हे खेलौना हरि झूमरि।
रहि गेलै छौ-मासक पेट हे खेलौना हरि झूमरि।
जब बरिअतिया दलान बीच अएलै हे खेलौना हरि झूमरि।
मैना के उठलै दरदिया हे खेलौना हरि झूमरि।
हँसै छै बरिअतिया मुँह मे डालै पान हे खेलौना हरि झूमरि।
खीर खायब की देखब छठिहार हे खेलौना हरि झूमरि।
कानै छै कहरिया मुँह मे डालै पान हे खेलौना हरि झूमरि।
तीन मूड़ केँ कोना उघने जायब हे खेलौना हरि झूमरि।

प्रथम दल— मारबऽ तँ मारबऽ हो - हो रे,
ई गारि किए पढ़बऽ ना ?
द्वितीय दल— पढ़बौ तँ पढ़बौ हो - हो रे,
हमही सम्हारबौ ना ।

विपुल जलराशि मे रहितहुँ जलविन्दु सँ रिक्त कमल पर झूमरि खेलेबाक तात्पर्य विशुद्ध दर्शन सँ अछि। माया मे निर्लिप्त कर्मप्रधान जीवनक संकेत एहि गीत मे पाओल जाइछ।[२]

मानव स्वभावक सहज कलहक संगहि पारस्परिक सहयोग एव सद्भावनाक अपूर्व समन्वय एहि मे अछि जे लौकिक जीवन मे अनिवार्य रहैछ।

प्रस्तावनाक एहि अंशक आगाँ प्रस्तुत नृत्य केँ सफल बनेबाक हेतु किछु आनो-आन उपकरणक आवश्यकता होइछ जकरा एक तरहक उद्दीपन कहल जाए सकैछ।

---

२ मिथिलाक जन-जीवन मे आध्यात्मिक तथ्य तेना ने प्रवेश कएने अछि जे एहेन कोनो कार्य नहि जाहि मे ओ सन्निहित नहि अछि। नेना-भुटकाक द्वारा पोखरि मे नेहेवा कालक करिया झूमरिक गीत एवं खेल जे एवं क्रमक अछि :—

पौती मे की ? —झरनी
झरनी मे की ? —कंघी
कंघी मे की ? —केश
केश मे की ? —ढील
ढील मे की ? —लीख
लीख पटापटि मारै छी
करिया झूमरि खेलै छी
लीख पटापटि मारै छी
करिया झूमरि खेलै छी

ओकर तात्पर्य आद्याशक्ति काली सँ अछि। पौती ब्रह्माण्डक प्रतीक थिक। झरनीक सम्बन्ध संहार सँ अछि। कंघी मानवताक प्रतीक थिक जकरा केश रूपी माया परिवेष्ठित कएने रहैछ। ढीलक अर्थ रक्तबीज सँ अछि तथा लीख ओकर संतान थिक जकरा नख रूपी दर्पण पर मारल जाइछ।

चंदा जे उगलै झलमीलि रे दैया।
उगि कें छपित नहि होवै, उगि कें
कथि सँ झँपतै चंदवा रे दैया।
कथि सँ झँपबै आठो अंग, कथि सँ—
बदरी झँपतै चंदवा रे दैया,
पटुकहि हम झँपबै आठो अंग।

मनुष्य सौंदर्यप्रिय प्राणी थिक तथा प्रकृति चिरनूतन सौंदर्यक अक्षय निधि। अतएव मनुष्यक प्रवृत्ति ओकरा प्रकृतिक दिसि सतत् आकृष्ट करैछ। उपर्युक्त गीत मे रमणीक निगूढ़ सौंदर्यक समता चन्द्रमा सँ कएल गेल अछि।

अभिनयक गीत जकर प्रारम्भ हास-परिहास मे भए अभिनय मे उत्तेजना आनबाक निमित्तक थिक एहि तरहक अछि :—

कजरी खेलै लए गेलियै हे तूतक गली,
झुमका हेरेलियै अमरूदक गली
सासु कहए मारमार, ननदि करए चुगली।
सैयाँ जालिम जोर करै मारै अंगुली।
कजरी खेलए गेलियै हे तूतक गली।

एहि गीत मे सौंदर्य सरोवरक एक चंचल एवं उच्छृङ्खल तरंगक रूप मे नारीक उल्लेख उपलब्ध होइछ जकर सम्बन्ध तूति एवं लतामक संग पाओल जाइछ किन्तु पारिवारिक जीवनक मार्मिक दिग्दर्शन एहि गीत मे सेहो सन्निहित अछि।

एवंक्रमें 'जट-जटिनक' प्रस्तावना मे सहगान एवं नृत्य सहित संबाद-गीतक द्वारा उत्सबक उल्लासक हेतु उद्दीपन जुटाओल जाइछ, उत्सवक लालसाक संग जीवन-अन्तक आशंकाक शाश्वत संयोगक मार्मिक उल्लेख होइछ तथा दाम्पत्य जीवन सँ सम्बद्ध घटनाक क्रमिक परिचय प्राप्त होइछ। तदुपारान्त कथानक प्रारम्भ कएल जाइछ।

जट-जटिनक कथानक कें अंक वा सन्धि मे तँ विभाजित नहि कएल जाए सकैछ कारण जे ई चरमविन्दु दिसि अग्रसर भेनहार तथा संघर्ष एवं घातप्रतिघात सँ युक्त कथानक नहि थिक। वस्तुतः एहि अभिनय कें प्रसंगमाला कहब अधिक उपयुक्त होयत। नाटक मे घटनाक क्रमिक चक्र

एवं अप्रत्याशित परिणति आदि नाटकीय उपकरणक स्थान मे उत्सुकताक उत्कर्ष एवं भावक चमत्कार अछि :—

जटिनक माएक वर्ग—हमरा जटिन केँ हमरा जटिन केँ माँथ शोभै सिनुरा
लिलाट शोभै टिकुली।
अंगिया गुलबिया शोभै माफ करू रे जटा हमरा
जटिन देखि मत भूलू रे।
जटक माएक वर्ग—हमरा जटा केँ हमरा जटा केँ सिर शोभै पगिया
कान शोभै कुण्डल।
धोतिया गुलाबी शोभै माफ करू गे जटिन हमरा
जटा देखि मत भूलू गे।
जटिनक माएक वर्ग—हमरा जटिन केँ गला शोभै हँसुली सिर
शोभै मंगटिका।
माफ करू रे जटा हमरा जटिन देखि मत भूलू रे।
जटक माएक वर्ग—हमरा जटा केँ हमरा जटा केँ माँथ शोभै
बाबरी कपार शौभै टिका!
माफ करू गे जटिन हमरा जटा देखि मत भूलूगे।
जटिनक माएक वर्ग—हमरा जटिन केँ हमरा जटिन केँ हाथ शोभै
कँगना पैर शौभै कड़वा।
माफ करू रे जटा हमरा जटिन देखि मत भूलूरे।
जटाक माएक वर्ग—हमरा जटा केँ हमरा जटा केँ हाथ शौभै
छड़ी पैर शौभै पनही
माफ करू गे जटिन हमरा जटा देखि मत भूलूगे।

उपर्युक्त गीत मे प्रणयक स्पष्ट दिग्दर्शन पाओल जाइछ। जट एवं जटिन एक दोसराक रूप एवं गुण पर आकृष्ट तँ अछि किन्तु ओहि प्रणय केँ दाम्पत्यक रूप तँ मात्र वर-कन्याक अभिभावकेटा दए सकैछ। फलस्वरुप वर एवं कन्याक दुहु दिसि सँ दुहुक रूप-गुणक मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कएल गेल अछि। निम्नलिखित गीत :—

जटक माए वर्ग—लए जयबऽ नौ सय बरियाती, जोर करबऽ
बियाह हे समधिन।
जटिनक माएक वर्ग—फेर देबअ नौ सय बरियाती, नहि करबऽ
बियाह हे समधिन।

जटक माएक वर्ग—लए जयबऽ मसक बाजा, जोर करबऽ
बियाह हे समधिन, बल करबऽ बियाह

जटिनक माएक वर्ग—फेर देबऽ मसक बाजा, नहि करबऽ बियाह
हे समधिन।

मे जट-जटिनक माएक मध्य भेल वार्त्ताक थिक। जटक माए जटिनक माए केँ जटक विवाहक प्रसंग मे अनुनय-विनय करैत तँ अछि किन्तु जटिनक माए केँ ओ सम्बन्ध मान्य नहि अछि। फलस्वरूप जटक माएक अनुनय-विनय, जोड़ जबर्दस्ती, प्रलोभन निष्फल तँ होइछ किन्तु जगतक समस्त भैभव केँ प्राप्त कएलहुँ नरक अभाव मे नारी केँ जे तृषा रहैछ ओकरा केवल नरेटा तँ पूर्ण कए सकैछ! अतः जटिनक माए अपन कन्याक विवाह जट सँ करब स्वीकार करैत अछि तथा विवाहक ओरिआओन होमए लागैत अछि :—

जटिनक माएक वर्ग—जेबई रे बंका, जेबई रे बंका करबं रे बिआहे।
आनु ग ए सोनमाक साज,

जटाक माएक वर्ग—कहाँ रे पेबई कहाँ रे पेबई, सोनमाक साज
मोर जटा रहतई रे कुमार।

जटिनक माएक वर्ग—जेबई रे जटा, जेबई रे जटा करबौ रे बिआहे
आनू ग ए मौरियाक साज।

जटाक माएक वर्ग—कहाँ रे पेबई कहाँ रे पेबई मौरियाक साज
मोर जटा रहतइ रे कुमार।

जटिनक माएक वर्ग—जेबई रे जटा जेबई रे जटा, करबै बिआहे
आनू ग ए हँसुलिक साज।

जटक माएक वर्ग —कहाँ रे पेबई कहाँ रे पेबई हँसुलिक साज
मोर जटा रहतैह रे कुमार।

जटिनक माएक वर्ग —जेबई रे जटा, जेबई रे जटा, करबै बिआहे
आनू ग ए बलियाक साज।

जटक माएक वर्ग —कहाँ रे पेबइ, कहाँ रे पेबइ, बलियाक साज
मोर जटा रहतै रे कुमार।

उपर्युक्त गीत मे कन्या पक्षक माँग तथा वर पक्षक असमर्थताक दिग्दर्शन होइछ। विवाहक प्रसंग मे जे गीत अछि ओहि मे वर पक्ष कें लक्ष्य कए डहकनक गीत सेहो गाओल जाइछ :—

बंकाक दल — कहाँ रे पेबई, कहाँ रे पेबई, डलवाक साज
मोर बंका रहतै रे कुमार।

भकुलीक दल— डोमरा भैया भाय–भतीजा,
समधिन के लगवार
वैहे रे देतौ वैहे रे देतो
डलवाक साज।

बंकाक दल — कहाँ रे पेबई, कहाँ रे पेबई, मोरवाक साज,
मोर बंका रहतै रे कुमार।

भकुलिक दल— मलीवा भैया भाय-भतीजा,
समधिन के लगवार
वैहे रे देतौ वैहे रे देतौ,
मोरवाक साज ।

एवंक्रमें जट-जटिनक विवाह होइछ तथा विवाहक अवसर पर वर पक्ष सँ उपहार आदि आनबा मे जे त्रुटि रहैछ ओकर संकेत निम्नलिखित गीत मे उपलब्ध होइछ :—

जटिन—तेलवा जँ हम माँगलियहु रे जटा
तेलवा किए ने लौलें रे,
हरि मोरा वारी रे समैया अभगला तेलवा कियै ने लौलें रे।

जट — तेलवा जँ हम देलियो गे जटिन,
तेलवा कियै ने लेलें गे
मैया तोहर निसोखनो गे जटिन लेबहुँ ने देलकौ गे ।

जटिन—सिनुरा जँ हम मगलियो रे जटा
सिनुरा कियै ने लौलें रे

जट — सिनुरा जँ हम देलियो गे जटिन,
सिनुरा कियै ने कयलें गे
जटिन बहिन तोहर निसोखनी तोरा देखहु ने देलकौ गे।

जटिन - टिकुलिया जं हम मँगलियो रे जटा
टिकुली किये ने लौलें रे
हरि मोरा वारी रे समैया टिकुली किये ने लौलें रे।
जट — टिकुली जँ हम देलियो गे जटिन
टिकुली किये ने लेलें गे
मैया तोहर निसोखनी लगवहुँ ने देलकौ गे।

पति-पत्नीक जीवन तँ तखनहि सुखद थिक जखन ओहि दुहुक सम्मिलित प्रयास सँ आनन्दक गंगा प्रवाहित होइछ। पति कथमपि - पत्नी सँ क्षणमात्रोक हेतु पृथक नहि होमय चाहैत अछि किन्तु परिस्थिति जे प्रतिकुल होइछ। पति पत्नी कें अनेक तरहें बोधैत अछि, पारिवारिक अभावक दिसि ओकर मनोवृत्ति कें आकृष्ट करैत अछि और अपन विवशता कें प्रकट करैत तँ अछि किन्तु नारीक हठ साधारण तँ नहि :—

जट — घेरा फरलौ गे जटिन झुँगनी फरलौ गे,
तूँ नहि जेवही ससुरवा घेरा के बेचतौ गे।

जटिन— मैया बेचतौ रे जटा बहिनिया बेचतौ रे,
ऐ वेरी तँ लगनमा हम तँ नहिए जेबौ रे।

जट—पलंग घोरेबै गे जटिन तोसक घोरेबै गे,
ऐ वेरी जाड़ा हमरा लग के सुततै गे।

जटिन—बहिनि सुततौ रे जटवा बहिनि सुततौ रे,
ऐ वेरी तँ फगुनमा हम तँ नहिए जेबौ रे।

जट — कलकत्ता जेबौ गे जटिन वंगला जेबौ गे,
रुपैया जे पठेबौ से के राखतौ गे।

जटिन—मैया राखतौ रे जटा बहिनिया राखतौ रे,
ऐ वेरी जे लगनमा हम तँ नहिए जेबौ रे।

एवंक्रमें जट जटिनक प्रणय दाम्पत्यक रूप मे परिणत भए उल्लास-विलास एवं हास-परिहास मे कलहक माधूर्यक संग बितैत अछि तथा पति पत्नी पर अपन आधिपत्यक अनुसार द्विरागमनक हेतु जोड़ करैत अछि :—

जट — नउआ पठेबौ गे जटिनिया, नउआ पठेबौ गे,
एहि बेरि जे फगुनमा हम त गौना करेबौ गे।

जटिन—नउग्रा फेरेबौ रे जटा, नउग्रा फेरेबौ रे,
एहि बेरि रे फगुनमा हम त नहिये जेबौ रे,

जट — नहिये मानबौ गे जटिनिया, नहिये मानबौ गे,
एहि बेरि जे फगुनमा हम तँ वभना पठेवौ गे,

जटिन—बभना के मारबौ रे जटा, ओकरो मारबौ रे,
एहि बेरि जे फगुनमा हम तँ नहिए जेबौ रे।

जट — डोलिया पठेवौ गे जटिन कहरिया पठेबौ गे,
एहि बेरि जे फगुनमा हम तँ अपने ऐबौ गे

जटिन—डोलिया घुरेबौ रे जटा,कहरियो घुरेबौ रे,
जटा एहि वेरि फगुनमा हम तँ नहिये जेबौ रे।

उपर्युक्त गीत मे नैहरिक प्रति नारीक सहज अनुरागक अतिरिक्त विचारक स्वतन्त्रता एवं आधिपत्यक अभाव पाओल जाइछ जे नारी हृदयक प्रधान गुण तँ थिक किन्तु नारीक जीवन तँ पतिक सानिध्यें मे सफल होइछ! अतएव पुनि जटिनक द्विरागमनक हेतु दिन मनेबाक प्रयास होइछ :—

जट — पहिल लियोनमा हजमा ऐलौ गे जटिन,
जटिन गे एहि बेरि लगनमा गौना करे तौ गे जटिन।

जटिन—हजमाक संग हम नै जयबौ हो बाबा,
ओ बाटे घाटे लहछू करेतै हो बाबा।

जट — दोसर लियोनमा बभना ऐतौ गे जटिन, पंडित ऐतौ गे जटिन
जटिन गे एहि बेरि लगनमा गौना करेतौ गे जटिन।

जटिन—बभनाक संग हम नै जेबौ रे जटा,
बाटे घाटे पोथिया उचारतै रे जटा,
केदुलीक वन मे हमरा छोड़तै रे जटा।

जट — तेसर लियोनमा भैंसुर ऐतौ गे जटिन,
जटिन गे एहि वेरि लगनमा गौना करेतौ गे जटिन,

जटिन—भैंसुरक संग हम नै जेबौ रे जटा,
बाटे घाटे लठिया घूमेतै रे जटा,
भैंसूरक संग मे छति हेतै रे जटा।

जट — चारिम लियोनमा ननदोसिया एतौ गे जटिन
जटिन गे एहि वेरि लगनमा गौना करेतौ गे जटिन ।

जटिन— ननदोसियाक संग हम नै जेबौ रे जटा
जटा रे भरि बाट कनखी चलेतै रे जटा ॥

जट — पाँचम लियोनमा अपने ऐबौ गे जटिन,
एहि बेरि लगनमा हम नहि मानबौ गे जटिन ।

जटिन—तोरा संग हम जेबौ रे जटा,
जटा रे तु तँ बाटे घाटे पनमा खिलैबे रे जटा,
तु तँ बाटे घाटे गोर दबेबें रे जटा
तु तँ राहे बाटे बीजया डोलेबें रे जटा ।

वस्तुतः प्रणय मे प्रक्षिप्त नारीक आत्मसम्मान पाओल जाइछ जे निःसंकोच एवं निर्भिक भए पुरुषक अवहेलना करैत अछि । जटिन मे स्वभावतः मुग्धाक सहज गुण सन्निहित तँ अछि, किन्तु चंचलता, स्वच्छन्दता एवं स्वतंत्रता केँ रहितहुँ ओ अपन प्रियतमक संग सासुर जेबाक हेतु उद्यत अछि :—

काँचहि बाँस के बसुलिया गे मैना
मैना, जूमि रे गेलै बभना लियोनमा गे मैना
कहि दहुन ससुर जन केँ, भेजि देताह उड़नि रे खटोलवा,
कतेक दिन रहबै रे नैहरबा उमरिया मोर बीतलै रे नैहरबा
वयसबा मोर बीतलै रे नैहरबा ।

वस्तुतः जटिन काँच वाँसक बाँसुरिये तँ थिक ! ओहि काँच बाँसक बाँसुरी केँ बनोनिहार ओकर पति जे ओकरा लयबाक हेतु अएलैक ! पतिक संग जयबाक कारणो तँ अछि जे ओ ओकरा भरि बाट पान खूआबैत, पैर दवबैत और पंखा डोलबैत जे जेतैक ! अतएव ओ अपन ससुर सँ उड़न खटोला पठेबाक आग्रह करैत अछि ।

पतिक संग हास-परिहास करैत जटिन सासुर तँ गेल किन्तु ओकर मोन जे दुई विरोधी धार मे डूबैत और उतरैत छल, आशाक स्वर्णिम श्रृंग पर चढ़ि हर्षक तुमुलनाद करैत छल तथा उल्लासक तूलिका सँ अपन सोनाक

सपना कें अपन मनोनुसार रंगैत छल ससुरक भवनक डयौढ़ी कें देखि ओ विषादक स्याही सँ ओहि सोनाक सपना कें पोति ओकरा गहन कालिमामय बनौलक जकर अभिव्यक्ति एहि गीत मे सन्निहित अछि —

जटिन—हम नहि जयबौ रे जटा हम नहि जयबौ रे,
ऐहेन मलिन डयौढ़ो मे कोना कें रहबौ रे,
हमर दादा दरोगा सन ड्यौढ़ी बनवा देही रे।

ऐन्द्रिक वासना मे निर्लिप्त नारी जे भावनाक मूलाधार एवं सांसारिक सुखक आलय थिक सासुर अबितहिं मधुर उलहन एवं चंचलताक परित्याग तथा संकोचक आवरण सँ आच्छादित भए जाइछ। ओकर कर्त्तव्य, युक्ति, कार्य और विचार मे पूर्ण परिवर्त्तन होइछ तथा ओ सामाजिक एवं पारिवारिक व्यवहार कें ऐहिक सुख सँ बेसी महत्त्व दैत अछि —

जटिन—भोर भेलै रे जटा भिनसरवा भेलै रे
जटवा कोइलिया बोलै रे
जटवा छोड़ि देहि अँचरबा
हम तँ अँगना बहारबै रे।

जट — मैया बहारतै गे जटिनिया,
बहिनियाँ बहारतै गे।
जटिनी आजुक रतिया हम
तँ पलंगवे गमेबै गे।

जटिन—माय की कहतै रे जटा बहिनि की कहतै रे
सारे गामक लोक हमरा दुषतै रे।

जट— माय की कहतै गे जटिन, बहिनि की कहतै गे,
सारे गामक लोक हमरा की कहतै गे ?
जटिनि आजुक रतिया हम तँ पलंगवे गमेबै गे॥

एहिना आनन्द और विषादक अनुभूतिक संग दाम्पत्य जीवनक उलझन प्रारम्भ होइछ :—

जट — हमें तोरा पूछियौ हे गे जटिनियाँ
दिल सँ गे जटिनी परेम सँ गे
झूमका कहमा हेरैलें गे ?

जटिन—सारी रात हेरे जटवा तोहरे बिछौनमा रे
जटवा तोहरे लगीचवा रे
जटवा होयते भिनुसरवा तोहर मैया चोरेलकौ रे।

जट — हमें तोरा पूछियौ हे गे जटिनियाँ
दिल सँ गे जटिनी परेम सँ गे कंगनमा कहमा हेरेले गे ?

जटिन—सारी रात हे रे जटवा तोहरे बिछौनमा रे
जटवा तोहरे लगीचवा रे
जटवा होयते भिनसरवा तोहर बहिनि चोरैलकौ रे।

उपर्युक्त गीत मे पारिवारिक कलहक मार्मिक चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि। पुतहुक प्रति सासुक तथा भाउजक प्रति ननदिक स्वाभाविक आचरण एहि मे देखाओल गेल अछि जे प्रधानतः समाज मध्य पाओल जाइछ। एहि सांकेतिक अभिव्यक्तिक उपरान्त संवाद दाम्पत्य-जीवनक मधुर एवं मनोहर अनुभूति कें व्यावहारिक जीवन मे अनैत अछि जकर सम्बन्ध प्रति-दिनक पारिवारिक जीवनक साधारण विषमता सँ अछि। कल्पना एवं मर्मक स्तर, श्रम एवं लौकिक व्यवहारक स्तर सँ भिन्न नहि अछि। अतएव जट-जटिन मे यथार्थमूलक एवं श्रृंगारिक दुहु प्रकारक नाट्यक ध्वनि एकहि संवाद मे उपलब्ध होइछ। कोहबरक कोमल वातारण मे झूमकाक हरायब तथा आँगन बहारबाक प्रसंगक चर्चा कएल गेल अछि। एहि सँ जटिनक अल्हर-पनक बोध होइछ। नैहरक वातावरण सँ आयल नववधू के अपन सासुरक नव गृह मे वधू सुलभ व्यवहार कें सिखए पड़ैछ। अतएव एहि संवाद मे :—

जट — नविके चलिहें गे जटिनियाँ नविकें चलिहें गे।
जहिना नवतै काँच करचिया तहिना नविहैं गे॥

जटिन—नहिए नबबौ रे जटवा नहिए नबबौ रे।
हम त बाबा के दुलारी धीया तनिकै चलवौ रे॥
जेना चलै गाम जिमीदरवा तहिना चलवौ रे॥
हाथ फेक कें चलवौ रे जटा गोड़ फेक के चलबौ रे।
हम तँ बाबा के दुलारी धीया उताने चलबौ रे॥

जट — नबहिं पड़तौ गे जटिनियाँ नबहिं पड़तौ गे।
जेना नवतै कौनिक सीसवा तहिना नवबें गे॥

जटिन—नहिए नवबौ रे जटवा नहिए नववौ रे।
जेना रहतै केराक थमबा तहिना रहबौ रे॥

जट — नविकें चलिहें गे जटिनियाँ नविकें चलिहें गे।
जेना नबतै धानक सीसवा तहिना नविहें गे॥

जटिन— नहिए नवबौ रे जटवा नहिए नवबौ रे।
जेना रहतै बाँसक कोपरवा तहिना रहवौ रे।

जट — नविकें चलिहें गे जटिनियाँ नविकें चलिहें गे।
जेना नवतै धानक सीसवा तहिना नविहें गे॥

जटिन—नहिए नवबौ रे जटा नहिए नवबौ रे।
बथाने जायबौ रे जटा बथाने जयबौ रे॥
बाबा तोहर दुअरिया जटा सरम सँ मरतौ रे।
खम्हार पर जयबौ रे जटा खम्हार पर जयबौ रे।
भैया तोहर खम्हार पर जटवा सरम सँ मरतौ रे॥

पति-पत्नी कें शिष्टता, व्यवहार, एवं नम्रताक सीख तँ दैत अछि किन्तु ओ तँ मुक्त, स्वतंत्र, स्वावलम्बिनी तथा श्रमशीला सहचरी थिक! एहि सभहक अतिरिक्त ओ अपन पैघ बापक दुलारी बेटी सेहो तँ थिक! अतएव जटिन कें व्यावहारिक जीवन सँ बेसी स्वाधीनता एवं समान अधिकार प्रिय अछि। किन्तु जट स्वभावत: अपन पत्नी पर आधिपत्य राखए चाहैत अछि तथा ओकरा ओ अपन मनोनुकूल बनावए चाहैत अछि जे मुग्धाक आचरणक सर्वथा प्रतिकूल होइछ।

दाम्पत्य जीवन मे स्त्रीक हठ, आभूषणक उत्कट अभिलाषा एवं पारस्परिक हास-परिहासक केहेन महत्त्व अछि ओकर दिग्दर्शन एहि गीत मे सन्निहित अछि :—

जटिन—जटा रे जटिन कें मँगवा भेल खाली
मंगटिकवा तुँ कहिया लयवह रे।

जट — जटिन गे सोनरा छौ तोहर यार
मंगटिकवा त पेन्हाये देतउ गे

जटिन—जटा रे जटिनक डँड़वा भेल खाली
सड़ियवा तुँ कहिआ लयबह रे

जट — जटिन गे बजजा छौ तोहर यार
सड़िअवा तँ पेन्हाये देतउ गे
जटिन—जटा रे जटिनक हथवा भेल खाली
चुड़िअवा तुँ कहिआ लयवह रे
जट — जटिन गे मनिहरवा छौ तोहर यार
चुड़िअवा त पेन्हाये देतउ गे।

एहि तरहक हास-परिहास प्रेमायुक्त पुरुष एवं स्त्री मध्य यथार्थ नहि भए कृत्रिम होइछ जे रागात्मक वृत्ति मे नवस्फूर्त्ति जाग्रत करबाक सुन्दर साधन थिक।

दाम्पत्य जीवन सँ सम्बद्ध एक नितान्त मनोरन्जक कथा निम्न-लिखित गीत मे वर्णित अछि:—

जट — ढुलचल विहुली ढुलचल
जटिन—कहाँ ढुलन मे दिदिया
जट — सोनराक दुकनमा ढुलचल
जटिन—सोनराक पूत मोरा मारलक
जट — कौने गुनहिए मारलक ?
जटिन— मंगटीका छुअत मोरा मारलक
जट —– मारबौ रे सोनरा तोरो सोनारिन केँ
मोरी बिहुल केँ मारलक
ढुलचल बिहुली ढ़लचल।
जटिन—कहाँ ढुलन मे दिदिआ ?
जट — बजजे दुकनमा ढुलचल
जटिन—बजजाक पूत मोरा मारलक
जट — कौने गुनहिए मारलक ?
जटिन—सड़िया छुअत मोरा मारलक
जट — मारबौ रे बजजा तोरो बजाजिन केँ
मोरी बिहुल केँ मारलक।

उपर्युक्त गीत मे जीवनक स्तर, सीमा एवं मर्यादाक यथार्थ सत्यक उद्घाटन कएल गेल अछि जतए जीवनक गुम्फित बहुलता तथा विलासताक दोष अमूर्त रूप मे उपस्थित अछि।

विलासिता अकर्मण्यताक प्रधान सोपान थिक जे मनुष्य कें गार्त मे मिलबैत अछि। वैभवपूर्ण जगत मे सुख और समृद्धि उद्यमे सँ तँ उपलब्ध होइछ। जट-जटिनक अनुरक्त जीवन बड़ हृदयग्राही अछि। अमोद-प्रमोद मे धनक अत्यधिक व्यय होयब साधारण थिक। अतः जटक परिस्थिति नितान्त शोचनीय होइछ जकर संकेत निम्नलिखित गीत मे उपलब्ध अछि :—

जट — हाथी परहक हौदा बेचवौलें गे जटिन
आब जटा जाइछौ विदेश

जटिन— ओहु सँ उत्तम बनबा देवह हे जटा
आब जटा नइ जाउ विदेश

जट — हाथक रूमलवा बेचवौलें गे जटिन
आव जटा जाइछौ विदेश

जटिन— ओहु सँ उत्तम हम सी देब हे जटा
आव जटा नइ जाउ विदेश

जट — सिर के पगरिया बेचवौलें गे जटिन
आब जटा जाइछौ विदेश

जटिन— ओहु सँ उत्तम कीन देवह हे जटा
आब जटा नइ जाउ विदेश।

प्रेम नारीजीवनक एक कठोर सत्य थिक जतए नारीक आत्म-समर्पण अपन चरम परिणति कें प्राप्त करैछ। प्रेमक अनिवार्य स्वीकृत एवं अप्रच्छन्न व्यक्तित्व वियोगक अवस्थे मे तँ पाओल जाइछ :—

जटिन—तूँ कहाँ कहाँ जाइछऽ विरवा बाँधि कें
जट — हम मोरंग जाइछी विरवा बाँधि कें
जटिन— तूँ की की लयब विरवा बाँधि कें
जट — हम मंगटीकवा लायव विरवा बाँधि कें
जटिन—केकरा पेन्हयवऽ विरवा बाँधि कें
जट — हम जटिन के पेन्हायब विरवा बाँधि कें
जटिन—हम तोड़ि के नेरायव विरवा बाँधि कें
जट— हम फेर के गढायव विरवा बाँधि कें

उपर्युक्त गीत मे जटक शालीनता एवं व्यावहारिकता तथा जटिनक हठवादिता और निर्भीकताक अतिरिक्त दाम्पत्य जीवनक असीम धैर्य और दृढ़ता कें देखाओल गेल अछि। पुनः एहि गीत मे जीविकाक कोनो आन साधन नहि पाबि जट नौकरीक हेतु परदेश जयबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि :—

जट — जाय दही गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लागि लयबौ जटिन नथिया सनेश।
जटिन—नथिया तँ हे जटा तरवाक धुर।
घरहि रहु जटा नयने के हजूर।।
जट — जाय दही गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लगि लयबौ जटिन मंगटिकवा सनेश।।
जटिन—मंगटिकवा तँ हे जटा तरबाक धूर
घरहि रहु जटा नयने के हजूर।।
जट — जाय दही गे जटिन देश रे विदेश।
तोरा लागि लयबौ जटिन हँसुली सनेश।।
जटिन—हँसुली जे लागे जटा गरबा के फाँस।
नहि करही रे जटा पूरबे के आस।।
पूरबे के पनिया कुपनियाँ छै रे जटा।
कुपनियाँ छै रे जटा लागि जयतौ कोढ़ ओ करेज।।
रही जाही रे जटा नयने के हजूर।

उपर्युक्त गीत मे नारी जीवनक यथार्थ तथ्य सन्निहित अछि। नारीक निरपेक्ष और निष्काम प्रेम ओकर आत्मसमर्पणे मे तँ पाओल जाइछ जे तृप्तक आलय, सात्विक और शुद्ध थिक। साध्वी नारीक अभिलाषा उन्माद नहि भए सुस्थिर एवं क्षणिक हठ उत्पीड़न नहि भए स्निग्ध मधुर होइछ जे पथभ्रष्ट पति कें पथप्रदर्शन, उज्जवल स्फूर्ति तथा अभिलाषाक पूर्त्ति करैछ। पतिक निष्ठुर उपेक्षो ओकर अचल प्रेम पर ने तँ आघात कए सकैछ और ने जगतक उपहासेक ओकरा कोनो चिन्ता रहैछ। प्रणयिनी नारी अपन अमर प्रेमक निधि कें अन्तःकरण मे लए समस्त संसार कें धरा सन बुझैत अविचल तथा निःशंक भाव सँ

कर्त्तव्यक पथ पर अग्रसर होइछ। जट जटिनक अनुनय विनय कें उपेक्षा कए जखन विदेश चल गेल तँ ओकर प्रेम एक भावना मात्र नहि रहि कठोर कर्त्तव्यक पालन मे उन्मुक्त भए अपन उज्ज्वलता, व्यापकता और विशालताक परिचय दैत अछि :—

जटिन—जटवा लागि धोतिया रंगले रहलै ना।
हे रंगले रहलै ना।
हाय राम इहो रे धोतिया तेजि के नोकरिये गेलै ना।।

पतिक वियोग मे पत्नीक जीवन एक साधना बनि जाइछ। जटक वियोग मे जटिनक सिद्धान्त कर्त्तव्यपालन होइछ तथा लोभ और मोह ओकर वुद्धि कें आवृत्त नहि कए सकल। ओ अपन पतिक अन्वेषण मे जाइछ :—

सोनार—हे गे जटिनियाँ दाय छोड़ऽ जट के आस
गरवा जोखि जोखि हँसुली पीन्हैवौ चलऽ हमरे साथ।
जटिन—हे रे सोनरवा भाय, रे अगिया लगेबो तोरो हँसुलिया
बजरा खसेबौ तोरो साथ।
रे मोर जटा पूरबे नोकरिया
रहबै जटे के आस
बारह बरस हम आँचर बान्हि रहबै
रहबै जटे के आस
रे तोरो सँ सुन्नर हमरो जटवा
बटिया चलैत लचि जाय
रे तोरो सँ सुन्नर हमरो बलमुआ
चान-सुरुज छपि जाय।

उपर्युक्त गीत मे नारीक प्रेम कें त्याग, संयम, पातीव्रत्य एवं सतीत्वक दृष्टिकोण सँ देखल गेल अछि।

तदुपरान्त जटिन जटक अन्वेषण मे झिंगनापुरक घाट पर जाइछ तथा नदी पार करबाक प्रसंग मे एहि तरहें कहै छ :—

जटिन—भइया मलहवा रे
उतारि देही झिंगनापुर के घाट

थारी देवौ एवा-खेवा
लोटा देवौ इनाम
भइया मलहवा रे
उतारि देही झिगनापुर के घाट ।

मल्लाह—नै लेवौ एवा-खेवा
नै लेवौ इनाम
बहिनी बटोहिनी गे
खोजि ले गय दोसर घटबार ।

जटिन—खसी देवौ एवा-खेवा
पाठी देवौ इनाम
भइया मलहवा रे
उतारि देही झिगनापुर के घाट ।

मल्लाह--नै लेवौ एवा-खेवा
नै लेवौ इनाम
बहिनी वटोहिनी गे
खोजी ले दोसर घरबार ।

जटिन—जटा देवौ एवा-खेवा
जटिन देवौ इनाम
भइया मलहवा रे
उतारि देही झिगनापुर के घाट

मल्लाह--नै लेबौ एवा-खेवा
जटिन लेवौ इनाम
वहिनी वटोहिनी गे
उतारि देवौ झिगनापुर के घाट

उपर्युक्त गीतक वार्त्ता जटिन एवं मल्लाहक बीचक थिक जे बड़ रोचक अछि । अन्त मे जट अपन गृह आपस अबैत अछि तथा जटिन नारी स्वभानुसार पुनः अपन एवं आन-आन पारिवारिक अभावक पूर्त्तिक प्रसंग मे ओकर भर्त्सना करैत अछि :—

जटिन—दूर-दूर रे जटा
दूर रह रे जटा

सड़ल चाउर रे जटा
राख छाउर रे जटा
बइगन-भाँटा रे जटा
जुलुफ सँवारैत चल अविहें रे जटा।

जट — दूर-दूर गे जटिन
दूर रह गे जटिन
सड़ल भात गे जटिन
सड़ल तीमन गे जटिन
सड़ल भाँटिन गे जटिन
केशबा गुहैत चल अविहें गे जटिन।

जटिन—दूर-दूर रे जटा
दूर रह रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा
बइगन-भाँटा रे जटा
धोतिया पेन्हैत चल अविहें रे जटा

जट — दूर-दूर गे जटिन
दूर रह गे जटिन
सड़ल भात गे जटिन
सड़ल तीमन गे जटिन
सड़ल भाँटिन गे जटिन
मंगटिकवा पेन्हैत चल अविहें गे जटिन।

उपर्युक्त वार्त्ता मे दाम्पत्य जीवनक मधुर कलहक वर्णन अछि।

पुनः—

जटिन—बाँकीपुर के मंगटिकवा रे जटा
केउ-केउ निरखै रे जटा
केउ-केउ परखै रे जटा।

जट— बाँकीपुर के मंगटिकवा हे जटिन
हमहिं निरखब गे जटिन
हमहिं पहिनेबै गे जटिन।

जटिन—कटकक ऊ जे कंगन रे जटा
केउ-केउ निरेखै रे जटा
केउ-केउ परखै रे जटा।

जट— कटकक ऊ जे कंगन गे जटिन
हमहिं निरखवै गे जटिन
हमहिं पहिनेबै गे जटिन।

जटिन—सूरत क ऊ जे मोती रे जटा
केउ-केउ निरखै रे जटा
केउ-केउ परखै रे जटा।

जट— सूरतक ऊ जे मोती गे जटिन
हमहिं निरखवै गे जटिन
हमहिं पहिनेबै हे जटिन।

उपर्युक्त वार्त्ता मे यद्यपि दाम्पत्य जीवनक कटु-सत्य सन्निहित अछि तथापि मानव प्रकृतिक अनेक रूप एहि मे वर्णित अछि। एहि मे उद्दंडता, लोभ आओर वासनाक मूल प्रवृतिक संग आत्म-संयम, ज्ञान तथा करुणाक ऐश्वर्य आओर पूर्णत्व पाओल जाइछ। एहि सभक अतिरिक्त बाँकीपुरक मंगटीका, कटकक कंगन तथा सूरतक मोतीक चर्चा नितान्त मनोरंजक एवं मार्मिक अछि जकर प्रख्याति समाज मे प्रारम्भहि सँ छल। निम्न गीत मे आर्थिक विषमताक कारणे पारिवारिक उलहनक संकेत उपलब्ध होइछ :—

जटिन—एतेक तँ कमएलह जटा की भेलऽ ना
सुनु मोरा जटा
जटिनि के मँगवा उदास लागै ना।

जट— एतेक तँ कमएलहुँ जटिन तोरा लागि ना
सुन मोर जटिन
मंगटिकवा गढा कए सन्दूक मे धयलहुँ ना।

जटिन—एतेक तँ कमएलह जटा की भेलऽ ना
सुनु मोरा जटा
जटिनि के कनमा उदास लागै ना।

जट— एतेक तँ कमएलहुँ जटिन तोरा लागि ना
सुन मोर जटिन
तरकि गढ़ा कए सन्दुक मे घयलहुँ ना।

वस्तुतः नारीक भाव-सौंदर्य, ओकर हृदयक पवित्रता, मृदुलता एवं सरलता ओकर स्पष्ट उक्ति ये मे रहैत अछि। पतिक कार्यक यद्यपि ओ तीव्र आलोचक थिक, किन्तु ओहि आलोचना मे जे सौहार्य एवं हितक भावना रहैछ ओ कतहु अन्यत्र नहि पाओल जाइछ। जट-जटिनक निम्नलिखित वार्त्ता मे रूचि-भेद, स्वभाव-भेद तथा प्रवृत्ति एवं निवृत्तिक विचार तँ पाओल जाइछ किन्तु कर्त्तव्य भावना मे सुख- दुखक भावनाक कोनहुँ स्थान नहि अछि :—

जटिन—चल चल रे जटा यमुनाक किनार
पान खइह रे जटा पिक नेरइह रे जटा।

जट— चल चल गे जटिन यमुनाक किनार
मंगटिकवा बिकाइछै लहरदार गे जटिन
तँ पेन्हे केँ पड़तौ।

जटिन—मंगटिकवा के नगवा भेल भारी रे जटा
त फेरे केँ पड़तौ
चल-चल रे जटा यमुनाक किनार
पान खइअह रे जटा पिक नेरइह रे जटा।

जट— चल चल गे जटिन यमुनाक किनार
कंठा बिकाइछै लहरदार गे जटिन
तँ पेन्हे केँ पड़तौ।

जटिन—कंठा के घुन्डी बड़ भारी रे जटा
तँ फेरे केँ पड़तौ।

जट एवं जटिनक उपर्युक्त गीत मे दाम्पत्य जीवनक दिग्दर्शन होइछ। एहि तरहेँ आमोद-प्रमोदक प्राणी जीवनक उलझन में पड़ि कहुखन तँ प्रवृत्तिक मार्गक अनुसरण करैछ और कहुखन निवृत्तिक आलम्बन ग्रहण करैत अछि।

निम्नलिखित गीत मे जटिन नारी स्वभावानुसार नैहर जेवाक प्रसंग मे कहैत अछि :—

जटिन—जाहि दिन से आरे जटा छुलें तू मोर मंगिया,
ओही रे दिन से ना, जटवा रे नहिरा भेल मोर
सपना ओहि रे दिन से ना।

जट— सावन भादव के धनि गे उमरल नदिया तू कोना
के जेवे ना, धनि गे डुबिये मरबें ना।

जटिन—काटि लेबै सामल सिकिया बुनि लेबै बेरिया ताहि रे
चढ़ि के ना,
जटवा रे पार हम उतरबै से ताहि रे चढ़ि के ना,

जट— टूटि जेतौ सामल सिकिया छिटकि जेतौ बेरिया से
डूबिये मरबें ना।
धनि गे जयबे नैहरबा से डूबिये जयबें ना।

मानव जीवनक केहेन कटु-सत्य उपर्युक्त गीत मे वर्णित अछि! नारीक दुख, अभिशाप, दारिद्र सभटाक कारण तँ ओकर पतिये थिक! नारीक हेतु पति अवगुण एवं दोषक खान तथा सासुर विषादक गहवर थिक। अतएव जटिन बटोहीक हाथें अपन नैहर संवाद पठबैत अछि तथा ओकरा सँ कहैत अछि जे ओ ओकर बाप, माय, और भाउज कें नहि कहि केवल भाइयेटा सँ कहतैक :—

बाट रे बटोहिया से सुनु मोरा भईया से
हमरो संवाद ने ने जाउ रे बटोहिया।
हमरो संवाद रे भैया बाबू से ने कहियह,
मैया, भौजी से सेहो ने कहियह रे बटोहिया,
हमरो संवाद रे भैया, भैया आगू कहियह,
सुनैत भैया घोड़िया दौड़े तै रे बटोहिया।

एहि गीत मे भाई बहिनिक नैसर्गिक प्रेमक उत्कृष्ट नमूना पाओल जाइछ जे मिथिलाक जन-जीवनक विशिष्टता थिक। पुनः भाइक प्रति बहिनिक अगाध स्नेहक आभास एहि गीत मे उपलब्ध होइछ :—

बारह बरिस पर हे सासु, भैया अयलै पहुनमा हे
डोली चढ़ी जयबै हे नैहर।

सावन भादव केर उमड़ल नदिया हे......
कौने विधि उतरब पार।
सिकिया केँ चिर - चिर बेड़बा बनेबै हे
ओहि रे चढ़ि जयबै हे नैहर।
टूटि जयतैं बेड़बा छिलकि जयतैं पनिया हे
डूबि रे मरतह भैया तोहर बहिन।

उत्सव और काल दुहु जीवनचक्रक आवश्यक अंग थिक। नदी मातृक मिथिलाक सावन-भादवक यात्राक आशंका केँ कतेक सजीव बनाओल गेल अछि जे अनिष्टक सांगोपांग चित्र के साकार रूप मे उपस्थित कए वास्तविक जीवनक अकथ्य करुण व्यंजना केँ चित्रित करैत अछि। उल्लास और मृत्युक एहि शाश्वत सह-अस्तित्वक सहज संकेते तँ एहि गीत मे पाओल जाइछ जकरा मे अन्तर्हित दार्शनिक तथ्य यद्यपि मुखरित नहि होइछ तथापि कालक घोर गर्जन वशीकरण सन एहि मे व्याप्त अछि।

अन्ततोगत्वा जटिन रूसि केँ नैहर जाइत अछि तथा जट ओकर वियोग मे संतप्त भँए विविध भेष धारण कए ओकर अन्वेषण मे जाइछ :—

जट— सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाय
एहि नगर मे जटिन भूलाए
जटा के छाता जटिन चोराए
नौ महिना के पेट ले के आए
सिर के टोपी से हो ले आए
हाथहु के छड़िया से हो ले आए
खोज मोर जोगिया, खोज मोर भाय।

ग्रामीण—एहि नगर मे जटिन न आय
जटा के छाता सहित न लाय
सिर के टोपी सेहो न लाय
हाथ के छड़िया सेहो न लाय
खोज मोर जोगिया, खोज मोर भाय।

जट प्रणयीक अभाव मे वेदना एवं अवसाद कें लए ओकरा अन्वेषण मे विविध प्रकारक आचरण करैत गामक लोक सँ ओकरा विषय मे पूछारि करैत अछि :—

जट—हाथी परक हौदा बिकाय गेल गे जटिन तोरे बिनु,
तोरे बिनु हमहुँ बेकल भेलहुँ गे जटिन तोरे बिनु,
तोरे बिनु महल उदास भेल गे जटिन तोरे बिनु,
तोरे बिनु अँगना में दुभिया जनमि गेल गे जटिन तोरे बिनु,
सेजिया पर मकड़ा वियाय गेलै गे जटिन तोरे बिनु,

यथार्थतः स्त्री और पुरुषक स्वभाव मे बड़ पैघ भिन्नता रहैछ। प्रकृतिक भेद सँ स्वभावक पूर्ण परिज्ञान नहि होइछ। फलतः स्त्री-पुरुषक अधोपतन होइछ तथा दाम्पत्य-जीवनक सफलता, उद्देश्य और पूर्त्ति होयब कठिन भए जाइछ।

जटनिक जखन कोनहुटा उदेश जटा कें नहि भेटैत अछि तँ ओ दही बेचनिहारिक रूप मे :—

दही लिअ लिअ दहीवाला
मोर मीठा दही छै बाजार के।

ग्रामीण स्त्रीलोकनि —तोहर ककर औंटल दूधवा
तोहर ककर पौरल दहिया ?
तोहर सड़ल गन्हाय छौ दहिया
तोहर खट्टा महकै छौ दहिया।

जट (गुआलिन) —माय ससुर के औंटल दूधवा,
माय सासु के पौरल दहिया,
माय बड़ मीठ लागै दहिया
माय साँची दूध के दहिया।
अगे लेगे गहिक बेटी दहिया
अगे लेगे गहिक बेटि दहिया।

ग्रामीण स्त्री— अगे नहि लेबौ नहि लेबौ दहिया
तोहर कोय नहि पूछै छौ दहिया।

सिपाही— हमहुँ त छि ए गुआलिन, मालिक के सिपाही हे
मारि डंटा, फोड़ि कोह, खाय लेब दही दुध हे।

जट– (गुआलिन) इहो मत जानह सिपाही असगर गुआलिन हे
मारि कोहा तोड़व थूथना, बेचि लेव दही दुध हे।
रात रहीं कुंजवन दिन बेचौं दही
घेघा सिपाही के नहि देव दही
कोय लेगे गहिक बेटी दहिया
मोर साँची दूध के दहिया

सम्मिलित गीत– दही दूध बीकि गेल रे जटा, बचि गेल घोर
आनह पुरैनी पात रे जटा पीबि लेह घोर।

जट– (गोढ़िनक रूप मे)
ससुर-भैंसुर मोरे जाल बुनै ना, जाल बुनै ना,
असगर बलमुआ मोरा माँछ मारै ना
माँछ लेहे माँछ लेहे गहिक बेटी ना।

ग्रामीण स्त्री– आहे कोन माँछ तोरा गोढ़िन हे
जट– आहे रेहुआ माँछ मोरा गोढ़िन हे
ग्रामीण स्त्री– आहे गहुम कें कं खूटे माँछ देवअ हे।
जट– आहे गहुम कें तीन खूटे माँछ देबअ हे।
ग्रामीण स्त्री– आहे तूँ माँछ बनबै नहि जानै
धुए नहि जानै
रान्हैं नहि जानै
खेबैया के खियाबै नहि जानै
धिया पुता कें परबोधै नहि जाने
गोढ़िया बहू गे।

जट (चूड़ीहाराक रूप मे)––
चूड़ी ले चूड़ी ले।

ग्रामीण स्त्री–– कहाँ के तू लाहे लहेरिया,
कहाँ के तोहर चूड़िया ?
जट–– मुंगेर के हम लाहे लहेरिया,
बनारस के मोर चूड़िया।
ग्रामीण स्त्री–– सुनु लहेरी भाय,
तोहर कै टका जोड़ चूड़िया।

जट— सुनअ गिरथाइन दाय,
मोर पाँच टका जोड़ चूड़िया
अछि बड़ मजा के चूड़िया
मोर चम-चम चमकै चूड़िया ।
ग्रामीण स्त्री— तोहर टन-टन टूटैछौ चूड़िया
तू पीटल जयबअ लहेरिया ।

उपर्युक्त गीत मनोरंजनात्मक प्रणाली मे जीवनक घटना-चक्रक द्योतक थिक । एकर अतिरिक्त जट मरुक तरंगिणी संग ओहि संगिनीक स्नेहावलम्बक उत्सुक अछि जकर विकास द्वेष, दम्भ एवं दुख कें निराजित करबाक निमित्त भेल तथा जे ओकर जीवन मे विद्युत एवं आशासन प्रवेष कएलक । वस्तुतः करुणा एवं सुखक साकार मूर्त्ति जटिन जटक जीवन मे ज्योति बनि आलोकित करबाक हेतु तँ आएल, किन्तु ओ स्वतः जीवनक उलझन बनि बाधा स्वरुप तँ भेल किन्तु नारी मे तँ लोककल्याणक शक्ति रहैछ । अतएव ओकर प्रेम वासनामात्र नहि रहि आत्मोन्नतिक दिसि अग्रसर होइछ ।

अतएव जटकें जटिनक अवयवक कोमलता, हँसीक आभा एवं गृह-कार्यक प्रवीणताक अभाव सतत् खटकैत अछि तथा ओ ओकर वियोग मे शून्यताक अनुभव करैत अछि :—

जट — अंगना मे दुभिया जनमि गेल गे माई, जटिन बिनु,
पलंग पर मकड़ा जाल विछाय देल गे माई जटिन बिनु,
सेज पर मकड़ा विआय गेल गे जटिन तोहरे बिनु ।
दुआरि पर गोवर सूखि गेल गे माई, जटिन बिनु,
भनसा रसोइया ठंढ़ाय गेल गे जटिन तोहरे बिनु ।

वियोग तँ नारीक जन्मजात अधिकार थिक जकरा ओ प्रायः वरदानक रूप मे ग्रहण करैछ तथा पुनर्मिलनक उत्कंठा सँ ओ ओकर वेदना और अभिशापकें सहैत अछि, तथा असीम धैर्य और दृढ़नाक परिचय दैत अछि । उपेक्षिता जटिनिक अनुरागिणी जीवन मे ओकर समस्त कामना जटक दिसि विकीर्ण होइछ तथा ओ जटक सभटा अपराध कें बिसरि अपन गृह प्रत्यागमन करैछ जकर मंगलगीत एहि तरहक अछि:—

हमरा कें की हे देवह दान रोही-मालती !
जौं तहूँ आहो भैया बिलमअ

छोटकी ननदिया देवग्र दान रोही-मालती ।
छोटकी ननदिया लागै हमरो बहिनिया,
अपनो जौवनमा देहो दान रोही मालती ।
हमरो जौवनमा भैया विखिया के मातलि
जेहो रे छूबै मरि जाय, रोही-मालती ।
तोहरे जौवनमा जब विखिया के मातलि,
तोहरे वलमु कैसे छूबे रोही-मालती
हमरो वलमु जी बंगला के सीखवा,
मयूर के पंख झाड़ि वीख रोही मालती ।

एहि तरहें मिथिलाक जट-जटिन नाट्यक एहि उद्धरण मे परम्पराशील नाट्य साहित्यक सहज अभिव्यंजना तथा गरिमाक आभास पाओल जाइछ । वस्तुतः मिथिलाक लोक-नाट्यक विलक्षणताक मार्मिक चित्रण, भावोत्कर्ष एवं भाषाक मधुरताक ई सजीव नमूना प्रस्तुत करैत अछि ।

